स्वामी विवेकानंद महिला महाविद्यालय

- FACULTY NAME- RENUKA
- COURSE -B.A. 1ST YEAR
- SUBJECT - GEOGRAPHY
- PAPER- GEOGRAPHY of RAJASTHAN

राजस्थान के भौतिक प्रदेश

प्रो. ए.के. तिवारी एवं डॉ.एच.एम. सक्सेना ने राजस्थान का प्रादेशिक भूगोल' में राजस्थान के धरातल, जलवायु, नदी-बेसिन आदि को आधार मानकर उन्हें प्रशासनिक सीमाओं के साथ समन्वित कर राजस्थान के प्रमुख गौण, तृतीयक एवं सूक्ष्म प्रदेशों के रूप में चार स्तरीय प्रदेशों का निर्धारण किया है। संरचात्मक दृष्टि से राजस्थान का भौतिक स्वरूप उत्तरी वृहत मैदान तथा प्रायद्वीपीय पठार का हिस्सा है।

राजस्थान के प्रदेश

Ganganagar
Hanumangarh
Churu
Bikaner
Jhunjhunu
Sikar
Alwa
Jaisalmer
Nagaur
Jaipur
Dausa
Bharatpur
Jodhpur
Dholpu
Ajmer
Tonk
Sawai
Madhopur
Karauli
Barmer
Pali
Bhilwara
Bundi
Jalore
Baran
Rajsamand
Sirohi
Chittorgarh
Kota
Udaipur
Jhalawar
Pratapgarh
Dungarpur
Banswara

राजस्थान को चार भौतिक भागों में विभाजित किया गया है:

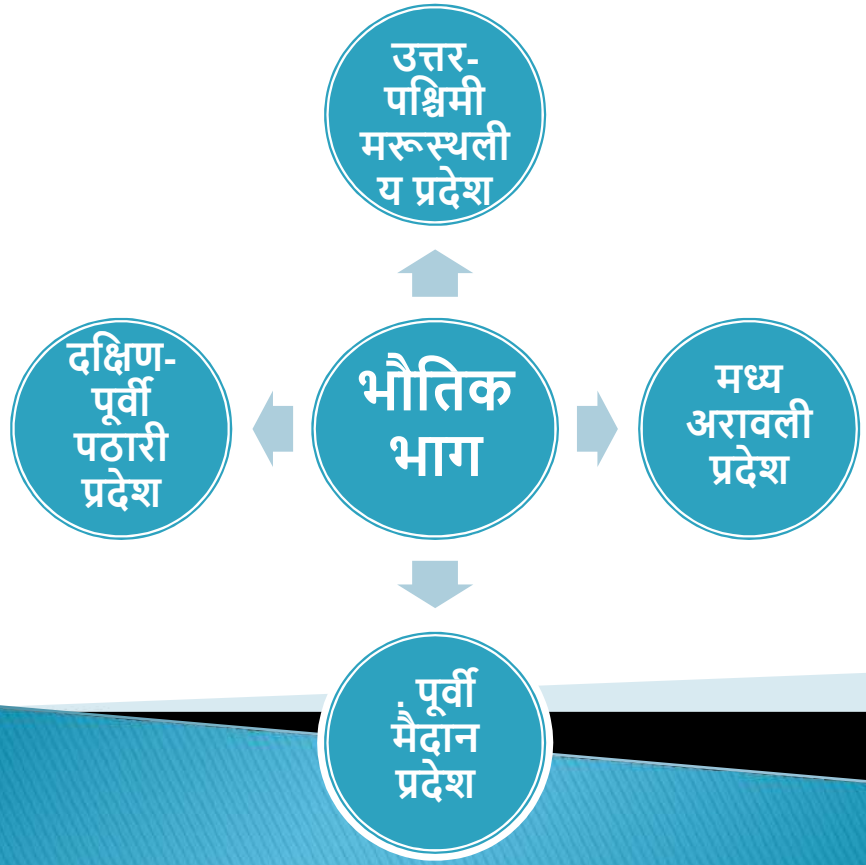

राजस्थान के भौतिक भाग

www.rajasthangyan.com

उत्तर-पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश

उत्तर-पश्चिमी मरूस्थलीय प्रदेश राज्य के लगभग 61.11 प्रतिशत क्षेत्र में फैला हुआ है।
उत्तर-पश्चिमी मरूस्थलीय प्रदेश में राज्य की 40 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है।
पहले राजस्थान में उत्तर-पश्चिमी मरूस्थलीय प्रदेश 58 प्रतिशत ही था, परंतु अरावली पर्वतमाला अत्यधिक कटी-फटी होने के कारण थार के मरूस्थल का विस्तार लगातार पश्चिम से पूर्व की ओर हो रहा है।
उत्तर-पश्चिमी मरूस्थलीय प्रदेश में राज्य के **श्रीगंगानगर**, **जोधपुर**, **बीकानेर**, **नागौर**, **जैसलमेर**, **सीकर**, **बाड़मेर**, **झुंझुनूं**, **जालौर**, **चूरू**, **पाली** और **हनुमानगढ़** जिले शामिल हैं।

उत्तर-पश्चिमी मरूस्थलीय प्रदेश को दो भागों में विभाजित किया गया है:

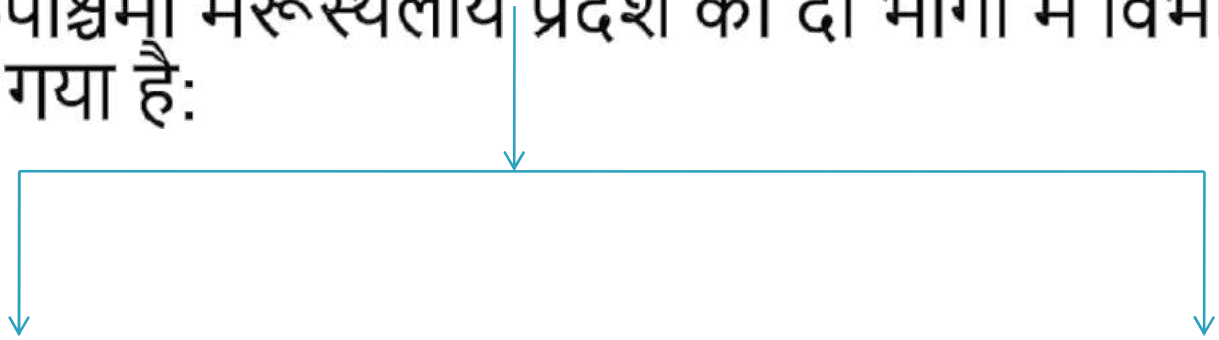

पश्चिमी विशाल मरूस्थल/रेतीला शुष्क मैदान

राजस्थान बांगर/बांगड़ु या अर्द्धशुष्क मैदान

पश्चिमी विशाल मरूस्थल/रेतीला शुष्क मैदान

रेतीले शुष्क मैदान के दो उपविभाग है:

- बालूकास्तूप युक्त मरूस्थलीय प्रदेश
- बालूकास्तूप मुक्त/रहित क्षेत्र

बालूकास्तूप युक्त मरूस्थलीय प्रदेश

- इस क्षेत्र में बालू रेत के विशाल टीले पाये जाते है।
- टीले तेज हवाओं के साथ अपना स्थान बदलते रहते है।
- बरखान बालुकास्तूप अधिकतर 20 सेन्टीमीटर (200 मि.मी.) की समवर्षा रेखा के पश्चिम में पाये जाते हैं।
- पोकरण-जैसलमेर रामगढ़ के पथरीले स्थलाकृतिक क्षेत्र बरखान प्रवाह के लिए आदर्श सतह प्रदान करते हैं तथा वनस्पति-विहीन होते हैं।

मेकी के अनुसार बालुका स्तूपों को निम्न भागों में विभाजित किया गया है:

1.अनुप्रस्थ बालुकास्तूप

- जब दीर्घकाल तक हवा एक ही दिशा में चलती है तब पवन की दिशा के समकोण पर इस प्रकार के बालुकास्तूप बनते हैं।
- ये थार मरुस्थल के पूर्वी तथा उत्तरी भागों में भारत.पाक सीमा के क्षेत्र के बीकानेर जिले के पुंगल के चारों ओर, हनुमानगढ़ जिले में रावतसर, श्रीगंगानगर में सूरतगढ़, चूरू, झुन्झुनू जिलों में पाये जाते हैं।

2.पवनानुवर्ती या रेखीय बालुकास्तूप (अनुदैधर्य बालुका स्तूप)

- रेखीय लम्बवत् बालुकास्तूपों के सोर महोदय, 1989 ने तीन प्रकार बताये हैं-
  1. सीफ
  2. वनस्पति युक्त रेखीय
  3. पवनविमुख रेखीय।

इन बालुकास्तूपों पर वनस्पति आवश्यक रूप से दिखाई देती है।

- ये बालूका स्तूप लम्बवत् समानान्तर श्रेणीयों के समान दिखाई देते हैं।
- इनका विस्तार जैसलमेर के दक्षिण-पश्चिम, रामगढ़ के दक्षिण-पश्चिम, जोधपुर एवं बाड़मेर जिलों में पाया जाता है।

3.पेराबोलिक बालूकास्तूप

- थारमरूस्थल में अधिकांश बालूकास्तूप इसी प्रकार के है|
- इनका निर्माण वनस्पति एवं समतल मैदानी भाग के बीच उत्पाटन से होता है। इनकी आकृति महिलाओं के हेयरपिन की तरह होती है।

4.तारा बालूकास्तूप

- इनका निर्माण संशलिष्ट और अनियतवाही पवनों के क्षेत्र में ही प्रमुखतः होता है।
- इनका निर्माण प्रमुखत मोहनगढ़ क्षेत्र के जैसलमेर पोकरण भाग में और सूरतगढ़ क्षेत्र में मरुस्थल के उत्तरी पार्श्व . पर पाया जाता है।

5.अवरोधी बालूका स्तूप

- किसी भी अवरोध के कारण बालू के जमाव से बने बालूका स्तूप
- छोटी झाड़ी, मृत पशु कंकाल, पेड़, भवन, आवास, अधिवास आदि के सहारे नाभि केन्द्र निर्मित होकर शनैःशनैः इन टीलों का निर्माण हो जाता है।
- पुष्कर, बूढ़ा पुष्कर, नाग पहाड़, बिचून पहाड़, जोबनेर पहाड़, सीकर की हर्ष पहाड़ियाँ, कुचामन की पहाड़ियाँ इसी प्रकार के अवरोधी टीलों को जन्म देती हैं।

6.नेटवर्क बालूकास्तूप

- ये उत्तर-पूर्वी मरूस्थलीय भाग हनुमानगढ़ से हिसार, भिवानी (हरियाणा) तक मिलते है। लिटिल रन- कच्छ की खाड़ी के क्षेत्र का मैदान।

7.बरखान बालुकास्तूप

- अधिकतर 20 सेन्टीमीटर (200 मि.मी.) की समवर्षा रेखा के पश्चिम में पाये जाते हैं।
- पोकरण-जैसलमेर रामगढ़ के पथरीले स्थलाकृतिक क्षेत्र बरखान प्रवाह के लिए आदर्श सतह प्रदान करते हैं तथा वनस्पति-विहीन होते हैं।
  वायु द्वारा लाई गई समस्त बालू का भार शीर्ष के छोर पर वायु की मन्द गति पड़ने के कारण छोड़ दिया जाता है तथा इसकी दोनों भुजाओं के बीच वायु की रगड से गर्त बन जाता है जिसे स्थानीय भाषा में ढांढ या थली कहते हैं।

8.स्क्रव कापीस बालुकास्तूप

➢छोटी-छोटी झाड़ियों ,घास के झुंड आदि के आसपास वायु के पवनानुवर्ती पर पवनविमुखी ढालों पर बालू के जमने एवं उन्हें दबा लेने से जो इधर-उधर अनियमित स्क्रव कापीस बालूकास्तूप बनते हैं।

➢पश्चिमी मरुस्थली प्रदेश में इस प्रकार के बालूकास्तूप सभी स्थानों पर देखने को मिलते हैं।

➢इनके चारों ओर पानी होता है, राजस्थान में इन्सेल बर्ग के उदाहरण है- सांभर झील, नक्की झील।

THANK YOU